International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 5, May 2018
Website- www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

भारत के यूनानी चिकित्सा प्रणाली के विकास में स्वतंत्रता सेनानी हकीम अजमल खान का योगदान

सिराज खान[1], बी. के. श्रीवास्तव[2]

- ज्ञानोदय कॉलेज जैसीनगर सागर म.प्र. 2. डा. हरिसिंह गौर विश्वविघालय सागर म.प्र.

शोध सारांश

यूनानी चिकित्सा प्रणाली का विकास 460 ई.पू.–377 ई.पू. को हुआ। हिप्पोकेटस के पश्चात् अरस्तु, हेरोफिलस, इरेसिस्ट्रास, इब्न सिना, डायस्कोराइड्स, गालेन, अल–ममुन, इब्न मसावेह, राजिज, इब्न इषाक, इब्न अल बेतर आदि अनेक विषेषज्ञ यूनानी चिकित्सा नक्षत्र में सामने आए, जिन्होंने इस चिकित्सा प्रणाली में बहुत योगदान किया। केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद्, जो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत संगठन है, यूनानी चिकित्सा पद्धति के विभिन्न मौलिक और व्यावहारिक पक्षों में स्वतंत्र और बहु–आयामीय अनुसंधान को विकसित करने में लगी हुई है। हकीम अजमल खान बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में दिल्ली में 'तिब्बिया' कॉलेज की स्थापना करके भारत में यूनानी चिकित्सा का पुनरूत्थान करने के लिए जाना जाता है, और साथ ही एक रसायनज्ञ डॉ. सलीमुज्जमन सिद्दीकी को सामने लाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है।

मुख्य बिंदु–यूनानी चिकित्सा, हकीम अजमल खान, यूनानी चिकित्सा प्रणाली के सिद्धांत ।

प्रस्तावना

यूनानी चिकित्सा प्रणाली का प्रारंभ ग्रीक में (460 ई.पू. –377 ई.पू.) को हुआ। बाद में उसे अरबियों और फारसियों द्वारा विकसित किया गया। स्पष्ट किया गया बीमारी एक समान प्रक्रिया है और शरीर की रोग के प्रति प्रतिक्रिया ही इसके लक्षण है। चिकित्सक का प्रमुख कार्य शरीर की प्राकृतिक शक्ति में सहयोग देना है। उन्होंने यह माना कि शरीर में चार द्रव्य (पदार्थ) हैं जो शारीरिक संतुलन बनाये रखते हैं। उन्होंने भोजन और रोग के उपचार के लिए कुछ ओषधियों के प्रयोग पर भी जोर दिया।

हिप्पोकेटस के पश्चात् अरस्तु, हेरोफिलस, इरेसिस्ट्रास, इब्न सिना, डायस्कोराइड्स, गालेन, अल–ममुन, इब्न मसावेह, राजिज, इब्न इषाक, इब्न अल बेतर आदि अनेक विषेषज्ञ यूनानी चिकित्सा नक्षत्र में सामने आए, जिन्होंने इस चिकित्सा प्रणाली में बहुत योगदान किया। अरस्तु का शरीर रचना विज्ञान और भ्रूण विज्ञान संबंधी अध्ययन, गालेन का ''शरीर रचना विज्ञान का महत्व'' और व्यावहारिक शरीर क्रिया विज्ञान संबंधी अध्ययन, इब्न मसावेह की पोषक औषधियों, बुखार, वेनिस्कषन, कप्पिंग उदर के विकार, मोतियाबिंद, अतिसार, कोलिक

जन्तु और अलेकमी संबंधी पुस्तक और एविसेन्ना की चिकित्सीय पुस्तक 'कैनन'''यूनानी चिकित्सा प्रणाली के विकास के अच्छे उदाहरण हैं। राजिज द्वारा लिखित चिकित्सीय पुस्तकों में सबसे अधिक ख्याति प्राप्त पुस्तक ''हलहावी'' हैं जो चिकित्सा और शल्य–चिकित्सा से संबंधित एक विष्वकोष है। उन्होंने स्माल–पॉक्स और खसरे के विषय में कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखीं जैसे अल–किताबुल मन्सूरी और ट्रीटीज। इनके अतिरिक्त सबसे अधिक प्रसिद्ध चिकित्सकों में एक थे इब्न–सिना (900 ई. पू.–1037 ई.पू.), जो एक चिकित्सक, दार्षनिक, वैज्ञानिक थे जिन्होंने आने वाले समय तक इस चिकित्सा प्रणाली को जीवित रखा।[1]

आधारभूत सिद्धांत :

यूनानी चिकित्सा प्रणाली द्रव्य के सिद्धांत पर आधारित है जिसमें यह माना गया है कि शरीर में चार द्रव्य, नामः–रक्त (दाम), फ्लैग्म (बलगम), यैलो बाइल (सफरा) और ब्लैक बाइल (संदा) होते हैं। शरीर की इन द्रव्यों की बहुलता के आधार पर व्यक्तियों के मिजाज को तदनुसार सैग्विन, फलेग्मैटिक, कोलारिक और मैलन्कालिक शब्दों के द्वारा व्यक्त किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में एक अनन्य द्रव्य संघटन होता है जो शरीर के द्रव्यात्मक संतुलन की स्वस्थतापूण स्थिति का परिचायक है। यूनानी चिकित्सा उस समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जब कोई व्यक्ति द्रव्यात्मक असंतुलन को महसूस करता है। सही भोजन और पाचन क्रिया से द्रव्यात्मक संतुलन पुनः बन जाता है। इसमें प्रमुख जोर रोग के निदान पर दिया गया है जो नब्ज (पल्स), बाउल (मूत्र), बराज (मल) आदि की जांच से होता है। इसमें रोग की रोकथाम के लिए छह अनिवार्य पूर्वापेक्षांए निष्चित की गई है। 'आसबाब–ए–सित्ते–जरूरिया' के रूप मे ज्ञात ये अनिवार्यताएं हैं– हवा, पेय, खाद्य पदार्थ, शारीरिक गति और विश्राम, मानसिक गति और विश्राम, नींद और जागना और उत्सर्जन व प्रतिधारण।

यूनानी चिकित्सा प्रणाली में अनेक प्रकार से उपचार किया जाता है जो निम्नलिखित है :–

(1). इलाज बिल–तदबीर (रेजिमेंटल थिरेपी) (2). इलाज बिल– गीजा (डाइटों थिरेपी) (3). इलाज बिल– दवा (फार्मेको थिरेपी) (4). जराहत–(सर्जरी)।

रेजिमेंटल थिरेपी में षिरा शल्य क्रिया, कपिंग, स्वैटिंग, डयूरिसिज, टर्किष बाथ, मसाज, मैटास्टेटिस, कोंटेराइजेषन, पर्गिग, वामिटिंग, व्यायाम, लीचिंग आदि शमिल हैं। डाइटो थिरेपी में विषेष प्रकार के भोजन के सेवन से विभिन्न बीमारियों का इलाज होता है जबकि फार्मेको थिरेपी में प्राकृतिक औषधों, जिनमें अधिकांष जड़ी–बूटियां हैं, का इस्तेमाल किया जाता है हालांकि इस प्रणाली में जन्तुओं और खनिज पदार्थों से मिलने वाली औषधियों का प्रयोग भी किया जाता है। इस चिकित्सा प्रणाली में बहुत लंबे समय से सर्जरी का प्रयोग भी होता रहा है। यूनानी चिकित्सा में आज तक विभिन्न जटिल और चिरकारी रोगों के उपचार के लिए एकल औषधों और मिश्रित औषधों का इस्तेमाल होता है।[2]

निदान और रोग का उपचार :

रोग के निदान और स्वास्थ्य लाभ के लिए उसके उपचार की यूनानी पद्धति स्वभाव या ''मिजाज'' की संकल्पना पर आधारित है। द्रव्य पदार्थों की भी अपनी विषिष्ट प्रकृति होती है। मिजाज मे परिवर्तन का संबंध द्रव्य पदार्थों के संतुलन में परिवर्तन से है। मिजाज में किसी प्रकार के परिवर्तन से व्यक्ति के स्वास्थ्य में परिवर्तन आता है। इस प्रकार द्रव्य पदार्थों और

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**

मिजाज में असंतुलन पैदा होने और शरीर के एक या एक से अधिक हिस्सों द्वारा अपषिष्ट पदार्थों का निष्कासन न हो सकने पर रोग उत्पन्न होता है। निदान कार्य में निम्नलिखित शामिल है :–

- नब्ज देखकर और थर्मामीटर की सहायता से शरीर के तापमान का पता लगाना।
- गुर्दे, यकृत और पाचन संस्थान ठीक कार्य कर रहे हैं या नहीं इसका पता लगाने के लिए मूत्र की जांच करना।
- मल की जांच।
- नेत्र, होंठ, दांत, गला और टोंसिल की सूक्ष्म जांच।
- रोगी की मानसिक व भावनात्मक स्थिति जो मानव शरीर के कार्य–करण में विभिन्न प्रकार के असंतुलन को दर्षाती है, का भी ध्यान रखा जाता है।

रोगी की पूरी जांच के पश्चात् उपचार शुरू किया जाता है। उपचार प्रमुखतः औषधों से किया जाता है और इन औषधों की भी अपनी अलग प्रकार की और विषेष प्रकृति होती है। (विभिन्न डिग्रियों में गर्म, ठण्डा, आर्द्र, सूखा आदि)। औषधों के प्रयोग से शरीर की स्वतः प्रतिरक्षण कार्य प्रणाली सक्रिय हो जाती है जिससे द्रव्य पदार्थों का संतुलन फिर से बन जाता है। इस पद्धति में यह मान्यता है कि मानव शरीर में प्राकृतिक प्रतिरक्षण कार्यप्रणाली मौजूद रहती है। औषधों का कार्य इस प्रतिरक्षण कार्य–प्रणाली को तेज करना और उसे सुदृढ़ बनाना है। दूसरे शब्दों में औषधि से न केवल मौजूद असंतुलन को सामान्य किया जाता है बल्कि शरीर की स्वभाविक प्रतिरक्षण प्रणाली में भी सुधार किया जाता है ताकि भविष्य में उस रोग से बचा जा सके या उसके खतरे को कम किया जा सके। इस प्रकार यह उपचार सामान्यतः उपचारी और रोग–निरोधक प्रकार का है और प्रभावषाली हैं। यूनानी प्रणाली में रोगों की रोकथाम और रोग–प्रतिरक्षण संबंधी उपायों पर बल दिया जाता है। नियम से भोजन करना उपचार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा ह।[3]

भारत में यूनानी चिकित्सा का आगमन :

भारत सरकार ने यूनानी औषधों की भेषज संहिता और एक सरकारी फार्मलरी तैयार करने के लिए एक यूनानी फार्मेकोपिया समिति का गठन किया जिसमें यूनानी विषषज्ञ और अन्य वैज्ञानिक शामिल थे। यूनानी चिकित्सा की राष्ट्रीय फार्मुलरी (अंग्रेजी रूपान्तर) का पहला भाग जिसमें 441 उत्तम मिश्रित फार्मूलेषन है, प्रकाषित हो चुका है और इसके दूसरे भाग से संबंधित कार्य जिसमें मिश्रित औषधालय 202 हैं मुद्रण के लिए तैयार है। इसके तीसरे भाग (अंग्रेजी रूपान्तर) और भारतीय यूनानी भेषज संगह का कार्य चल रहा है।

शिक्षा :

इस समय केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा परिषद्, जो संसद के एक अधिनियम नामतः भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1970 ई. के द्वारा स्थापित किया गया। एक सांविधिक निकाय है, यूनानी चिकित्सा पद्धति में षिक्षा और प्रषिक्षण संबंधी सुविधाओं की मानीटरिंग कर रही है। इस समय देष में यूनानी चिकित्सा के लगभग 25 मान्यता प्राप्त कॉलेज हैं जो इस पद्धति में षिक्षा और प्रषिक्षण संबंधी सुविधांए प्रदान करते हैं।

ए.के. तिब्बिया कॉलेज, अलीगढ, मुस्लिम विष्वविद्यालय; अलीगढ, राजकीय निजामिया कॉलेज, हैदराबाद, नई दिल्ली मे स्नातकोत्तर षिक्षा और अनुसंधान संबंधी सुविधांए भी उपलब्ध है।

1975 ई. में इसके निर्णय के अनुसार भारत सरकार ने कर्नाटक की राज्य सरकार के सहयोग से बंगलूर में एक पृथक राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान स्थापित किया ह।

यह संस्थान यूनानी चिकित्सा पद्धति की विषेषज्ञताओं में प्रषिक्षण और षिक्षण भी शुरू कर सकती है।

अनुसंधान :

भारत सरकार के संरक्षण के अंतर्गत यूनानी चिकित्सा सहित विभिन्न भारतीय चिकित्सा पद्धतियों मे क्रमबद्व अनुसंधान केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान परिषद् की स्थापना के साथ 1969 ई. में शुरू हुआ। वर्ष 1978 ई. में केन्द्रीय भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान परिषद् की चार पृथक परिषदें, अर्थात आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी–चिकित्सा, होम्योपैथी, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा के लिए एक–एक परिषद् मे विभाजित किया गया। केन्द्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद्, जो स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत एक स्वायत संगठन है, यूनानी चिकित्सा पद्धति के विभिन्न मौलिक और व्यावहारिक पक्षों में स्वतंत्र और बहु–आयामीय अनुसंधान को विकसित करने में लगी हुई है।[4]

हकीम अजमल खान :

हकीम अजमल खान या अजमल खान (1868 ई.–1927 ई.) एक यूनानी चिकित्सक और भारतीय मुस्लिम राष्ट्रवादी राजनेता एवं स्वतंत्रता सेनानी थे। उन्हें बीसवीं शताब्दी के आरम्भ में दिल्ली में 'तिब्बिया' कॉलेज की स्थापना करके भारत म यूनानी चिकित्सा का पुनरूत्थान करने के लिए जाना जाता है, और साथ ही एक रसायनज्ञ डॉ. सलीमुज्जमन सिद्दीकी को सामने लाने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। जिनके यूनानी चिकित्सा में उपयोग होने वाले महत्त्वपूर्ण चिकित्सीय पौधों पर किये गए आगामी शोधों ने इसे एक नई दिशा प्रदान की थी।[5] वे गाँधी जी के निकट सहयोगी थे। उन्होंने असहयोग आन्दोलन (सत्याग्रह) में भाग लिया था, खिलाफत आन्दोलन का नेतृत्व किया था, साथ ही वो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्ययक्ष भी निर्वाचित हुये थे, तथा 1921 ई. में अहमदाबाद में आयोजित कांग्रेस के सत्र की अध्यक्षता भी की थी। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष बनने वाले पांचवें मुस्लिम थे। वे जामिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के संस्थापकों में से एक थे, और 1920 ई. में इसके कुलाधिपति बने तथा 1927 ई. में अपनी मृत्यु तक इसी पद पर बने रहे।

प्रारंभिक जीवन :

हकीम अजमल खान साहिब का जन्म 1863 ई. में हुआ था। अजमल खान के पूर्वज, जो प्रसिद्ध चिकित्सक थे, भारत में मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के शासनकाल में भारत आए थे। हकीम अजमल खान के परिवार के सभी सदस्य यूनानी हकीम थे। उनका परिवार मुगल शासकों के समय से चिकित्सा की इस प्राचीन शैली का अभ्यास करता आ रहा था। वे उस जमाने में दिल्ली के रईस के रूप में जाने जाते थे। उनके दादा हकीम शरीफ खान मुगल शासक शाह आलम के चिकित्सक थे और उन्होंने शरीफ मंजिल का निर्माण करवाया था, जो एक अस्पताल और महाविद्यालय था जहाँ यूनानी चिकित्सा की पढ़ाई की जाती थी।[6]

उन्होंने अपने परिवार के बुजुर्गों, जिनमें से भी प्रसिद्ध चिकित्सक थे, की देखरेख में चिकित्सा की पढ़ाई शुरू करने से पहले, अपने बचपन में कुरान को अपने हृदय में उतारा और पारंपरिक इस्लामिक ज्ञान की शिक्षा भी प्राप्त की, जिसमें अरबी और फारसी शामिल थी। उनके दादा हकीम शरीफ खान तिब्ब–इ–यूनानी या यूनानी चिकित्सा के अभ्यास के प्रचार पर जोर देते थे और इस उद्देश्य के लिए उन्होंने शरीफ मंजिल नाम अस्पताल रूपी कॉलेज की स्थापना, की जो पूरी उपमहाद्वीप में सबसे लोकोपकारी यूनानी अस्पताल के रूप में प्रसिद्ध था जहां गरीब मरीजों से कोई भी शुल्क नहीं लिया जाता था।

योग्य होने पर हकीम अजमल खान को 1892 ई. में रामपुर के नवाब का प्रमुख चिकित्सक नियुक्त किया गया। कोई भी प्रशस्ति हकीम साहेब को लिए बहुत बड़ी नहीं है, उन्हें 'मसीहा–ए–हिंद' और 'बेताज बादशाह' कहा जाता था। उनके पिता की तरह उनके इलाज में भी चमत्कारिक असर था और ऐसा माना जाता था कि उनके पास कोई जादुई चिकित्सकीय खजाना था, जिसका राज केवल वे ही जानते थे। चिकित्सा में उनकी बुद्धि इतनी कुशाग्र थी कि यह कहा जाता था कि वे केवल इंसान का चेहरा देखकर उसकी किसी भी बीमारी का पता लगा लेते थे। हकीम अजमल खान मरीज को एक बार देखने के 1000 रूपये लेते थे। शहर से बाहर जाने पर यह उनका दैनिक शुल्क था, लेकिन यदि मरीज उनके पास दिल्ली आये तो उसका इलाज मुफ्त किया जाता था, फिर चाहे वह महाराज ही क्यों न हों।

हकीम मोहम्मद अजमल खान अपने समय के सबसे कुशाग्र और बहुमुखी व्यक्तित्व के रूप में प्रसिद्ध हुए। भारत की आजादी, राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव के क्षेत्रों में उनका योगदान अतुलनीय है, वे एक सशक्त राजनीतिज्ञ और उच्चतम क्षमता के शिक्षाविद थे। हकीम अजमल ने यूनानी चिकित्सा की देशी प्रणाली के विकास और विस्तार में काफी दिलचस्पी ली। हकीम अजमल खान ने शोध और अभ्यास का विस्तार करने के लिए तीन महत्वपूर्ण संस्थाओं का निर्माण करवाया, 'दिल्ली में सेंट्रल कॉलेज', 'हिन्दुस्तानी दवाखाना' तथा 'आयुर्वेदिक और यूनानी तिब्बिया कॉलेज'; और इस प्रकार भारत में चिकित्सा की यूनानी प्रणाली को विलुप्त होने से बचाने में मदद की। यूनानी चिकित्सा के क्षेत्र में उनके अथक प्रयास ने ब्रिटिश शासन में समाप्ति की कगार पर पहुंच चुकी भारतीय यूनानी चिकित्सा प्रणाली में नई ऊर्जा और जीवन का संचार किया।[7]

जामिया इस्लामिया विश्वविद्यालय के संस्थापकों में से एक, अजमल खान को 22 नवम्बरं 1920 ई. में इसका प्रथम कुलाधिपति चुना गया और 1927 ई. में अपनी मृत्यु तक उन्होंने इस पद को संभाला। इस अवधि के दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय को अलीगढ़ से दिल्ली स्थानांतरित करवाया और आर्थिक तथा अन्य संकटों के दौरान व्यापक रूप से कोष इकट्ठा करके, और प्रायः खुद के धन का उपयोग करके उन्होंने इसकी सहायता भी की।

राष्ट्रवाद :

अजमल खान के परिवार के द्वारा शुरू किये गए उर्दू साप्ताहिक 'अकमल–उल–अखबार' के लिए लेखन कार्य आरम्भ करने के पश्चात् से उनके जीवन ने चिकित्सा के क्षेत्र से राजनीति के क्षेत्र की ओर रूख कर लिया। खान उस मुस्लिम दल का नेतृत्व भी कर रहे थे, जो 1906 ई. में शिमला में भारत के वायसराय को ज्ञापन सौंपने के लिए किया गया था। उसी साल, 30 दिसंबर 1906 ई. को जब इशरत मंजिल पैलेस में ऑल इंडिया

मुस्लिम लीग की स्थापना की गयी तथा वे भी ढाका में मौजूद थे। एक समय जब कई मुस्लिम नेताओं को गिरफ्तार किया गया, तब डा. अजमल खान ने मदद के लिए महात्मा गांधी से संपर्क किया। इसी प्रकार, प्रसिद्ध खिलाफत आन्दोलन में गांधी जी उनसे और अन्य मुस्लिम नेताओं से जुड़ें, जैसे मौलाना आजाद, मौलाना मोहम्मद अली और मौलाना शौकत अली। अजमल खान ऐसे एकमात्र व्यक्ति भी हैं जिन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, मुस्लिम लीग और ऑल इंडिया खिलाफत कमेटी का अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ है। उन्होंने अपनी यूनानी पढ़ाई दिल्ली के सिद्दीकी दवाखाना के हकीम अब्दुल जमील की देख रेख में पूरी की।

विरासत :

हकीम अजमल खान का पूरा जीवन परोपकार और बलिदान का प्रतिरूप हैं। हकीम अजमल खान की मृत्यु 29 दिसंबर 1927 ई. को दिल के दौरे के कारण हो गयी थी। हकीम अजमल खान ने अपनी सरकारी उपाधि छोड़ दी और उनके भारतीय प्रशासकों ने उन्हें 'मसीह–उल–मुल्क' (राष्ट्र की आरोग्य प्रदान करने वाला) की उपाधि दी। उनके बाद डॉ. मुख्त्यार अहमद अंसारी जे.एम.आई. के कुलाधिपति बने। एक अतालता–रोधी एजेंट अज्मलिन, और एक कारक संकर अजमल का नामकरण उनके नाम पर ही किया गया।

विभाजन के बाद :

भारत के विभाजन के बाद हकीम खान के पौत्र हकीम मुहम्मद नबी खान पाकिस्तान चले गए। हकीम नबी ने हकीम अजमल खान से तिब्ब (औषधि) सीखी और लाहौर में 'दवाखाना हकीम अजमल खान की स्थापना' की, जिसकी शाखाएं पूरे पाकिस्तान में हैं। अजमल खान के परिवार का आदर्श वाक्य हैं 'अजल– उल–अल्ला–खुदातुल्मल', जिसका अर्थ हैं 'किसी को व्यस्त रखने का सबसे अच्छा जरिया हैं मानवता की सेवा', और उनके वंशज इसी भावना का अनुसरण करते आ रहें हैं।[8]

सारांश

हकीम अजमल ने यूनानी चिकित्सा की देशी प्रणाली के विकास और विस्तार में काफी दिलचस्पी ली। हकीम अजमल खान ने शोध और अभ्यास का विस्तार करने के लिए तीन महत्वपूर्ण संस्थाओं का निर्माण करवाया, 'दिल्ली में सेंट्रल कॉलेज', 'हिन्दुस्तानी दवाखाना' तथा 'आयुर्वेदिक और यूनानी तिब्बिया कॉलेज'; और इस प्रकार भारत में चिकित्सा की यूनानी प्रणाली को विलुप्त होने से बचाने में मदद की। यूनानी चिकित्सा के क्षेत्र में उनके अथक प्रयास ने ब्रिटिश शासन में समाप्ति की कगार पर पहुंच चुकी भारतीय यूनानी चिकित्सा प्रणाली में नई ऊर्जा और जीवन का संचार किया।

संदर्भ ग्रंथ

1. भारत में भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं होम्योपैथी, योजना एवं मूल्यांकन एकांश स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 1993, पृ.–6–7.
2. वही, पृ.–8.
3. वही, पृ.–9.
4. वही, पृ.–10.
5. राजाराम, कल्पना, गांधी, नेहरू, टैगोर एवं आधुनिक भारत के प्रसिद्ध व्यक्तित्व, स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा.लि., जनकपुरी, 2009, पृ.–332.
6. वही, पृ.–332.
7. हाकिम, सैयद जिल्लुर रहमान, हाकिम अजमल खान (हिन्दी, ऊर्दू, और अंग्रेजी संस्करण), नेशनल बुक ट्रस्ट, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2004.
8. हकीम, सैयद जिल्लुर रहमान, शरीफ मंजिल, आइवन–आई–ऊर्दू, दिल्ली, 1988, पृ. –29–35.